स्नातक द्वितीय खण्ड हिंदी प्रतिष्ठा
तृतीय पत्र हिंदी प्रतिष्ठा
- प्रो० हरे कृष्ण झा हरि, हिंदी विभाग,
जे० एन० कॉलेज, मधुबनी

(1) ताज

प्रश्न → 'ताज' शीर्षक कविता का भाव स्पष्ट करें।

उत्तर → 'ताज' सुमित्रानन्दन पंत की एक प्रगतिवादी रचना है। प्रस्तुत कविता में कवि ने (मृतमानव की कब्र और जीवित मानव ने ताज को भावुकता के स्तर पर नहीं अपितु बौद्धिकता के धरातल पर तुलनात्मक परीक्षण किया है।

वस्तुतः ताज का अवलोकन कर भावुक व्यक्तियों के हृदय में प्रेम की तरंगें हिलोरें लेने लगती है परन्तु कवि के हृदय में सामान्तशाही और पूँजीवादी मनोवृत्तियों के प्रतीक के रूप में ताज को देखकर विद्रोह का भाव जाग्रत हो जाता है। वह अनुभव करता है कि एक ओर ताज का वैभव है, तो दूसरी ओर शोषित जनता की दीन-हीन दशा। कवि इस विषमता निरीक्षण कर क्षुब्ध हो उठता है और मानसिक आक्रोश वाणी के रूप में प्रकट होता है।

कवि को उस स्थिति से अत्यन्त

दुख होता है कि जब जग के जीवित प्राणी का जीवन दरिद्रता और शोषण के चक्की में पिसकर दयनीय एवं निर्जीव हो गया है, तब मृत्यु को ऐसी अलौकिक और दिव्य पूजा की जाये। यह बड़े ही दुख की बात है कि शव को संगमरमर के वैभवशाली महल में रखा जाय और जीवित मनुष्य नंगा, भूख से व्याकुल और निराश्रित रहे। हे मनुष्य! तुझे जीवन से भी ऐसी क्या घृणा हो गयी है जो तू आत्मा का तिरस्कार कर प्रेत और छाया के प्रेम में मस्त हो

कवि ताज को सम्बोधित करते हुए

कहता है कि हे ताज तुम चित्ताकर्षक अवश्य हो, परन्तु तुम अतीत की रूढ़ियों के प्रतीक हो। अतः तुम्हें तो वे ही लोग प्यार करते हैं जो उन सड़ी गली रूढ़ियों के शिकार हैं।

तात्पर्य यह कि मानवता को प्यार करनेवाला और मानव को शोषण के चक्र से मुक्त कराने वाला अभिलाषी प्रगतिशील विचारक कभी भी पुरानी मान्यताओं के प्रतीक ताजमहल को प्यार नहीं कर सकता।

हम इस संदेश को विस्तृत कर चुके हैं कि मृतकों का संबंध मृतकों से ही होता है। अतः मृतक ही मृतक को प्यार कर सकता है और जीवित व्यक्तियों के लिए मानव ही ईश्वर की विभूति के रूप में है। अतः जीवित व्यक्तियों को जीवित मानव के सुख-दुख का ध्यान रखना चाहिए। न कि मृत व्यक्तियों की कब्रों तथा उनके मृत आदर्शों के ध्यान में लीन होकर जीवित व्यक्तियों की उपेक्षा कर देनी चाहिए। इन पंक्तियों में कवि की मानव के प्रति गहन आस्था प्रकट होती है कि मानव का सर्वोत्तम लक्ष्य मानव का सर्वोत्तम विकास करना ही है।

प्रगतिवादी कवि की धारणा के अनुरूप ही कवि ने विवेच्य कविता में सरल एवं सुबोध भाषा शैली के माध्यम से अपने विचारों को सम्प्रेषित करने का सफल प्रयास किया है।